Under CSR Support by
pca | Foundation
missiongyan
कक्षा-12 इतिहास
हिंदी माध्यम
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
ARJUN BATCH
भक्ति सूफ़ी
परम्पराएं
Chapter-6 | Part-7

आज क्या पढेंगे ?

1. शंकरदेव
2. धार्मिक परंपराओं के इतिहासों का पुनर्निर्माण
3. अभ्यास प्रश्न

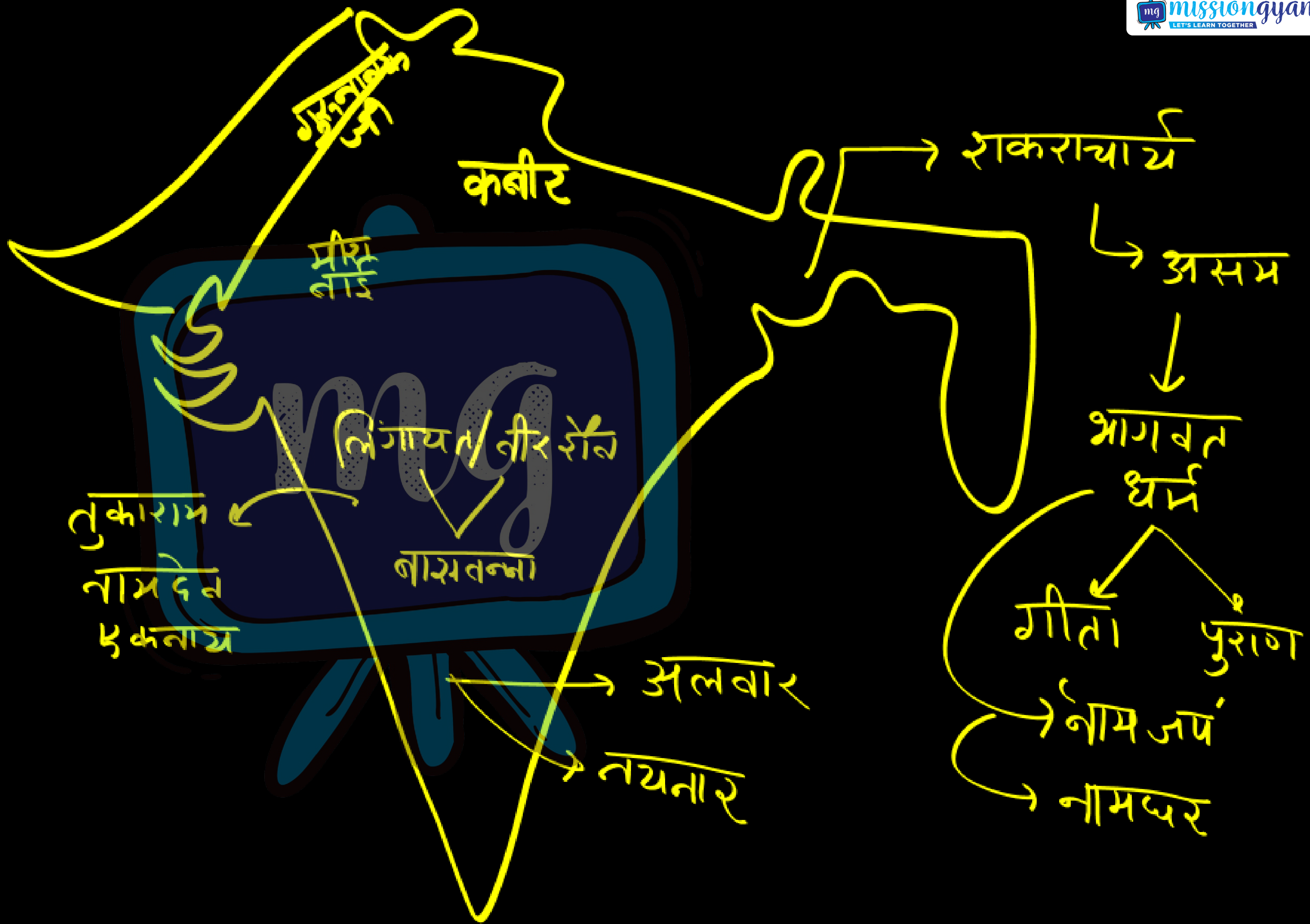
गुरुनानक जी
कबीर
मीराबाई
लिंगायत/वीरशैव
बासवन्ना
तुकाराम
नामदेव
एकनाथ
अलवार
नयनार
शंकराचार्य
असम
भागवत धर्म
गीता
पुराण
नामजप
नामघर

शंकरदेव

पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में असम में शंकरदेव वैष्णव धर्म के मुख्य प्रचारक के रूप में उभरे। उनके उपदेशों को 'भगवती धर्म' कह कर संबोधित किया जाता है क्योंकि वे भगवद् गीता और भागवत पुराण पर आधारित थे। ये उपदेश सर्वोच्च देवता विष्णु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव पर केंद्रित थे।

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शंकरदेव ने भक्ति के लिए नाम कीर्तन और श्रद्धावान भक्तों के सत्संग में ईश्वर के नाम उच्चारण पर बल दिया। उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार के लिए सत्र या मठ तथा नामघर जैसे प्रार्थनागृह की स्थापना को बढ़ावा दिया। इस क्षेत्र में ये संस्थाएँ और आचार आज भी पनप रहे हैं। शंकरदेव की प्रमुख काव्य रचनाओं में कीर्तनघोष भी है।

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बौद्ध ✓

अलवार ✓

धार्मिक परंपराओं के इतिहासों का पुनर्निर्माण

- इतिहासकार धार्मिक परंपरा के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए अनेक स्रोतों का उपयोग करते हैं –जैसे मूर्तिकला, स्थापत्य, धर्मगुरुओं से जुड़ी कहानियाँ, स्त्री और पुरुषों द्वारा लिखी गई काव्य रचनाएँ आदि।

- मूर्तिकला और स्थापत्यकला का हम इस उद्देश्य के लिए तभी इस्तेमाल कर सकते हैं जब हम उसके संदर्भ को अच्छी तरह समझें अर्थात इन आकृतियों और इमारतों को बनाने और उनका इस्तेमाल करने वालों के विचारों, आस्थाओं और आचारों की हमें समझ हो।
- साहित्यिक परंपराओं पर दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि उनमें काफ़ी विविधता है, और वे कई भाषाओं व शैलियों में लिखे गए हैं।

- कुछ स्त्रोत सरल, स्पष्ट भाषा में हैं जैसे कि बसवन्ना के वचन जबकि कुछ अन्य अलंकृत फारसी में लिखे गए हैं।
- प्रत्येक किस्म के मूल-पाठ को समझने के लिए तरह-तरह का कौशल चाहिए: कई भाषाओं की जानकारी, लेकिन इसके अलावा इतिहासकार को प्रत्येक विधि की शैली व शैलियों में सूक्ष्म अंतरों को भी पहचानना पड़ता है।

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सूफ़ी परंपरा के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए विभिन्न स्रोत

सूफ़ी ख़ानक़ाहों के आसपास अनेक ग्रंथों की रचना हुई जिनमें निम्न शामिल हैं:

1. सूफ़ी विचारों और आचारों पर प्रबंध पुस्तिका कश्फ़-उल-महजुब यह पुस्तक अली बिन उस्मान हुजविरी (मृत्यु 1071) द्वारा लिखी गई।

साहित्य इतिहासकारों को यह जानने में मदद करता है कि उपमहाद्वीप के बाहर की परंपराओं ने भारत में सूफी चिंतन को किस तरह प्रभावित किया।

2. **मुलफुज़ात (सूफी संतों की बातचीत):** मुलफुज़ात पर एक आरंभिक ग्रंथ फवाइद-अल-फुआद है। यह शेख निज़ामुद्दीन औलिया की बातचीत पर आधारित एक संग्रह है जिसका संकलन प्रसिद्ध फ़ारसी कवि अमीर हसन सिजज़ी देहलवी ने किया।

3. मक्तुबात (लिखे हुए पत्रों का संकलन): ये वे पत्र थे जो सूफी संतों द्वारा अपने अनुयायियों और सहयोगियों को लिखे गए। इन पत्रों से धार्मिक सत्य के बारे में शेख के अनुभवों का वर्णन मिलता हैं।

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

4. तज़किरा (सूफी संतों की जीवनियों का स्मरण) :

भारत में लिखा पहला सूफी तज़किरा मीर खुर्द किरमानी का सियार-उल-औलिया है। यह तज़किरा मुख्यत: चिश्ती संतों के बारे में था। सबसे प्रसिद्ध तज़किरा अब्दुल हक मुहाद्दिस देहलवी (मृत्यु 1642) का अखबार-उल-अखयार है।

काल-रेखा	
भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ मुख्य धार्मिक शिक्षक	
लगभग 500-800 ई.पू.	तमिलनाडु में अप्पार, संबंदर, सुंदरमूति
लगभग 800-900 ईसवी	तमिलनाडु में नम्मलवर, मणिक्वचक्कार, अंडाल, तोंदराडिप्पोडी
लगभग 1000-1100 ईसवी	पंजाब में अल हुजविरी, दाता गंज बक्श; तमिलनाडु में रामानुजाचार्य
लगभग 1100-1200 ईसवी	कर्नाटक में बसवन्ना
लगभग 1200-1300 ईसवी	महाराष्ट्र में ज्ञानदेव मुक्ताबाई; राजस्थान में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती; पंजाब में बहादुद्दीन जकारिया और फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर; दिल्ली में कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी

काल-रेखा	
भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ मुख्य धार्मिक शिक्षक	
लगभग 1300-1400 ईसवी	कश्मीर में लाल देद; सिंध में लाल शाहबाज़ कलंदर; दिल्ली में निज़ामुद्दीन औलिया; उत्तर प्रदेश में रामानंद; महाराष्ट्र में चोखमेला; बिहार में शराफुद्दीन याह्या मनेरी
लगभग 1400-1500 ईसवी	उत्तर प्रदेश में कबीर, रैदास, सूरदास; पंजाब में बाबा गुरु नानक; गुजरात में बल्लभाचार्य; ग्वालियर में अबदुल्ला सत्तारी; गुजरात में मुहम्मद शाह आलम; गुलबर्गा में मीर सैयद मौहम्मद गेसू दराज़; असम में शंकरदेव; महाराष्ट्र में तुकाराम

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

काल-रेखा	
भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ मुख्य धार्मिक शिक्षक	
लगभग 1500–1600 ईसवी	बंगाल में श्री चैतन्य; राजस्थान में मीराबाई; उत्तर प्रदेश में शेख अब्दुल कुद्दस गंगोही, मलिक मौहम्मद जायसी, तुलसीदास
लगभग 1600–1700 ईसवी	हरियाणा में शेख अहमद सरहिंदी; पंजाब में मियाँ मीर

प्रश्न 1. उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि संप्रदाय के समन्वय से इतिहासकार क्या अर्थ निकालते हैं?

सम्प्रदाय = सम्प्रदाय

उत्तर : विभिन्न संप्रदायों–धार्मिक विश्वासों एवं आचरणों का समन्वय लगभग 8वीं–18वीं शताब्दी के काल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता थी। संप्रदाय के समन्वय से इतिहासकारों का तात्पर्य है कि इस काल में विभिन्न पूजा प्रणालियाँ समन्वय की ओर बढ़ने लगी थीं।

- इस काल के साहित्य एवं मूर्तिकला दोनों से ही अनेक प्रकार के देवी देवताओं का परिचय मिलता है।
- विष्णु, शिव और देवी की विभिन्न रूपों में आराधना की परिपाटी न केवल प्रचलन में रही अपितु उसे और अधिक विस्तार एवं व्यापकता भी प्राप्त हुई।

- देश के विभिन्न भागों के स्थानीय देवताओं को विष्णु का रूप माना जाने लगा। "महान्" संस्कृत पौराणिक परम्पराओं एवं 'लघु' परम्पराओं के पारस्परिक सम्पर्क के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण देश में अनेक धार्मिक विचारधाराओं तथा पद्धतियों का जन्म हुआ।
- विद्वान इतिहासकारों का विचार है कि इस काल में पूजा-प्रणालियों के समन्वय के आधार में प्रमुख रूप से दो प्रक्रियाएँ कार्यशील थीं।

1. एक प्रक्रिया ब्राह्मणीय विचारधारा के प्रचार से संबंधित थी। पौराणिक ग्रंथों की रचना सरल संस्कृत छन्दों में की गई थी, जिन्हें वैदिक विद्या से विहीन स्त्रियाँ और शूद्र भी समझ सकते थे।

2. दूसरी प्रक्रिया का संबंध स्त्रियों, शूद्रों तथा अन्य सामाजिक वर्गों की आस्थाओं एवं आचरणों को ब्राह्मणों द्वारा स्वीकृत किए जाने तथा उन्हें एक नवीन रूप प्रदान किए जाने से था।

- समन्वय की इस प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण आधुनिक उड़ीसा राज्य में स्थित 'पुरी' में मिलता है।
- यहाँ के प्रमुख देवता जगन्नाथ (इसका शाब्दिक अर्थ है–संपूर्ण विश्व का स्वामी) को विष्णु का एक रूप मान लिया गया था। यह और बात है कि विष्णु के उड़ीसा में प्रचलित रूप तथा देश के अन्य भागों से मिलने वाले स्वरूपों में अनेक भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं।

- देवी संप्रदायों में भी समन्वय के ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध होते हैं। सामान्य रूप से देवी की पूजा-आराधना सिंदूर से पोते गए पत्थर के रूप में ही किए जाने का प्रचलन था।
- पौराणिक परम्परा के अंतर्गत इन स्थानीय देवियों को मुख्य देवताओं की पत्नियों के रूप में मान्यता प्रदान कर दी गई।

- कभी उन्होंने लक्ष्मी के रूप में विष्णु की पत्नी का स्थान प्राप्त किया तो कभी पार्वती के रूप में शिव की पत्नी को ।

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 2. किस हद तक उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली मस्जिदों का स्थापत्य स्थानीय परिपाटी और सार्वभौमिक आदर्शों का सम्मिश्रण है?

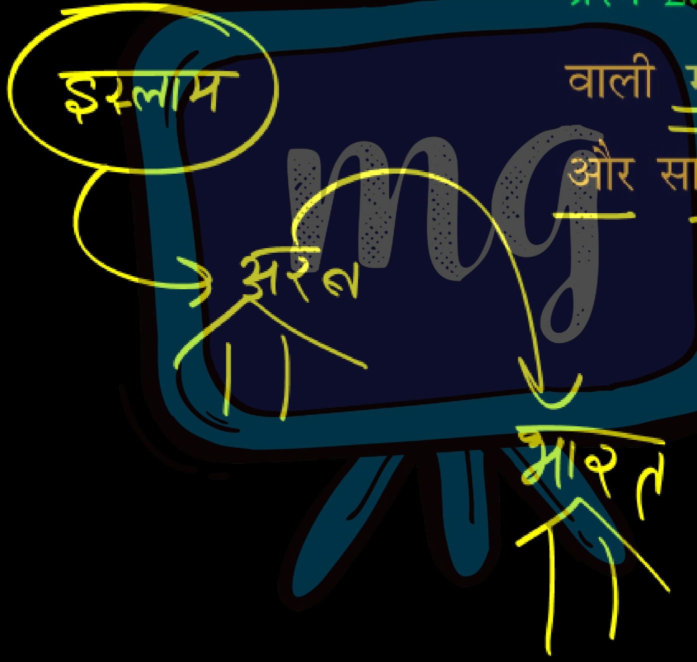

उत्तर : भारत में इस्लाम के आगमन के बाद होने वाले परिवर्तन शासक वर्ग तक ही सीमित नहीं रहे। उसने संपूर्ण उपमहाद्वीप में विभिन्न सामाजिक समुदायों अर्थात् किसानों, शिल्पियों, योद्धाओं आदि सभी को प्रभावित किया। एक ही समाज में रहते-रहते, हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे के खान पान, रीति-रिवाजों, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परंपराओं आदि की ओर आकर्षित होने लगे। इस प्रकार स्थानीय परम्पराएँ एक सार्वभौमिक धर्म को प्रभावित करने लगीं।

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- एक सार्वभौमिक धर्म के स्थानीय परम्पराओं के साथ सम्मिश्रण का संभवतः सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण मस्जिद स्थापत्य के क्षेत्र में देखने को मिलता है।

मस्जिद स्थापत्य के कुछ तत्त्व सार्वभौमिक होते हैं, जैसे-

- इमारत का मक्का की तरफ अनुस्थापन। इसे मेहराब (प्रार्थना का आला) तथा मिंबर (व्यास पीठ) की स्थापना से लक्षित किया जाता है। ऐसे सार्वभौमिक तत्त्व सभी मस्जिदों में समान रूप से पाए जाते थे।

- किन्तु मस्जिद स्थापत्य के अन्य तत्त्वों पर स्थानीय परिपाटियों का पर्याप्त प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उदाहरण के लिए, उपमहाद्वीप में बनाई गई मस्जिदों में अनेक तत्त्वों जैसे छत और निर्माण कार्य में प्रयोग किए जाने वाले सामान में भिन्नता देखने को मिलती है।
- इस भिन्नता का प्रमुख कारण था, मस्जिदों के स्थापत्य का स्थानीय स्थापत्य परम्पराओं से प्रभावित होना तथा निर्माण कार्य में स्थानीय रूप से उपलब्ध निर्माण सामग्री का प्रयोग किया जाना।

उदाहरण के लिए केरल, बांग्लादेश और कश्मीर की मस्जिदों के स्थापत्य पर स्थानीय स्थापत्य का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

- केरल :- शिखर केरल के मंदिर स्थापत्य की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता थी। अत: 13वीं शताब्दी में केरल में बनाई गई अनेक मस्जिदों की छतें शिखर के आकार की हैं।

❖ **बंगाल :-** इसी प्रकार आधुनिक बांग्लादेश के जिला मैमनसिंग में 1609 ई० में बनाई गई अतिया मस्जिद के गुम्बदों एवं मीनारों में इस्लामी स्थापत्य कला-शैली का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इस मस्जिद का निर्माण ईंटों से किया गया था।

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

❖ कश्मीर :– 1395 ई० में झेलम नदी के किनारे पर बनाई गई शाह हमदान मस्जिद पर कश्मीरी स्थापत्य शैली का उल्लेखनीय प्रभाव है।

यह मस्जिद कश्मीर काष्ठ (लकड़ी) स्थापत्यकला का एक प्रशंसनीय उदाहरण है।

इसके शिखर और छज्जे नक्काशीदार हैं। उन्हें पेपरमैशी से सुसज्जित किया गया है।

- इस प्रकार यह कहना उचित ही होगा कि उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली मस्जिदों का स्थापत्य स्थानीय परिपाटी और सार्वभौमिक आदर्शों का सम्मिश्रण है।

प्रश्न 3. बे शरिया और बा शरिया सूफी परंपरा के बीच एकरूपता और अंतर, दोनों को स्पष्ट कीजिए।

बे शरिया

↓

× शरिया

✓ करान

बा शरिया

↓

शरिया ×

करान ✓

उत्तर : सूफीवाद कई पन्थों अथवा सिलसिलों में संगठित था। सिलसिला का शाब्दिक अर्थ है- जंजीर, जो शेख और मुरीद के मध्य एक निरन्तर संबंध की परिचायक है।

सूफी सिलसिलों को मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है -

1. बा-शरीया (बा-शरा) और
2. बे-शरिया (बे-शरा)।

1. बा–शरीया का अभिप्राय था– इस्लामी कानून अर्थात् शरीया का पालन करने वाले सिलसिले।

2. बे–शरीया का तात्पर्य था– ऐसे सिलसिले जो शरीया में बँधे हुए नहीं थे। शरीया की अवहेलना करने के कारण उन्हें बे–शरीया के नाम से जाना जाता था।

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

❖ उल्लेखनीय है कि मुस्लिम समुदाय को निर्देशित करने वाले कानून को शरीया कहा जाता है। शरीया कुरान शरीफ तथा हदीस पर आधारित है।

बे-शरीया और बा-शरीया सिलसिलों में कुछ एकरूपताएँ और कुछ अंतर विद्यमान थे।

एकरूपताएँ -

1. दोनों सिलसिले एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे। उनके अनुसार अल्लाह एक है। वह सर्वोच्च, सर्वशक्तिशाली और सर्वव्यापक है।
2. दोनों अल्लाह के सामने पूर्ण आत्मसमर्पण पर बल देते थे।

3. दोनों पीर अथवा गुरु को अत्यधिक महत्त्व देते थे।

4. दोनों-इबादत अर्थात् उपासना पर अत्यधिक बल देते थे। उनके अनुसार अल्लाह की इबादत करने से ही मनुष्य संसार से मुक्ति पा सकता था।

अंतर –

1. बा–शरीया सिलसिले शरीया का पालन करते थे, किन्तु बे–शरीया शरीया में बँधे हुए नहीं थे।
2. बा–शरीया सूफी सन्त खानकाहो में रहते थे। खानकाह एक फारसी शब्द है, जिसका अर्थ है आश्रम।

बे – शरीया सूफी संत खानकाह का तिरस्कार करके रहस्यवादी एवं फकीर की जिन्दगी व्यतीत करते, उन्हें कलन्दर, मदारी, मलंग, हैदरी आदि नामों से जाना जाता था।

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

4. बा- शरीया सूफी सन्त गरीबी का जीवन व्यतीत करने में विश्वास नहीं करते थे। उनमें से अनेक ने सल्तनत की राजनीति में भाग लिया और सुल्तानों एवं अमीरों से मेल-जोल स्थापित किया। ऐसे सूफी संत कभी कभी दरबारी पद भी स्वीकार कर लेते थे।

प्रश्न 4. चर्चा कीजिए कि अलवार, नयनार और वीरशैवों ने किस प्रकार जाति प्रथा की आलोचना प्रस्तुत की?

उत्तर : अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा व ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज उठाई। इन संतों में कुछ तो ब्राह्मण, शिल्पकार और किसान थे और कुछ उन जातियों से आए थे जिन्हें अस्पृश्य माना जाता था।

- अलवार और नयनार संतों की रचनाओं को वेद जितना महत्त्वपूर्ण बताया गया । जैसे- अलवार संतों के मुख्य काव्य संकलन नलयिरादिव्यप्रबन्धम् का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता था।
- इस प्रकार इस ग्रंथ का महत्त्व संस्कृत के चारों वेदों जितना बताया गया जो ब्राह्मणों द्वारा पोषित थे ।

- वीरशैवों ने भी जाति की अवधारणा का विरोध किया। उन्होंने पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानने से इंकार कर दिया। ब्राह्मण धर्मशास्त्रों में जिन आचारों को अस्वीकार किया गया था, जैसे-वयस्क विवाह और विधवा पुनर्विवाह, वीरशैवों ने उन्हें मान्यता प्रदान की।
- इन सब कारणों से ब्राह्मणों ने जिन समुदायों के साथ भेदभाव किया, वे वीरशैवों के अनुयायी हो गए। वीरशैवों ने संस्कृत भाषा को त्यागकर कन्नड़ भाषा का प्रयोग शुरू किया।

प्रश्न 5. कबीर अथवा बाबा गुरु नानक के मुख्य उपदेशों का वर्णन कीजिए। इन उपदेशों का किस तरह संप्रेषण हुआ।

उत्तर : कबीर :- कबीर के अनुसार संसार का मालिक एक है जो निर्गुण ब्रह्म है। वे राम और रहीम को एक ही मानते थे। उनका कहना था कि विभिन्नता तो केवल शब्दों में है जिनका आविष्कार हम स्वयं करते हैं।

- वे वेदांत दर्शन से प्रभावित थे और सत्य को अलख (अदृश्य), निराकर ब्रह्मन् और आत्मन् कहकर संबोधित करते हैं। दूसरी ओर इस्लामी दर्शन से प्रभावित होकर वे सत्य को अल्लाह, खुदा, हजरत और पीर कहते हैं।
- बाबा गुरु नानक देव :- बाबा गुरु नानक ने भी कबीर की तरह निराकार भक्ति का प्रचार किया। उन्होंने यज्ञ, मूर्ति पूजा और कठोर तप जैसे बाहरी आडम्बरों का विरोध किया।

- हिंदू और मुसलमानों के धर्मग्रंथों को भी उन्होंने नकारा। बाबा के अनुसार परम पूर्ण रब का कोई लिंग या आकार नहीं होता।
- उन्होंने रब का निरंतर स्मरण व नाम जप को उपासना का आधार बताया। उन्होंने संगत (सामुदायिक उपासना) के नियम निर्धारित किए जहाँ सामूहिक रूप में पाठ होता था।

❖ उन्होंने गुरुपद परंपरा की भी शुरुआत की, जिसका पालन 200 वर्षों तक होता रहा। जहाँ कबीर ने अपने उपदेशों में क्षेत्रीय भाषा का इस्तेमाल किया, वहीं गुरुनानक ने अपने विचार पंजाबी भाषा के माध्यम से सामने रखे।

प्रश्न 6. सूफी मत के मुख्य धार्मिक विश्वासों और आचारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : इस्लाम की आरंभिक शताब्दियों में कुछ आध्यात्मिक लोगों का रहस्यवाद तथा वैराग्य की तरफ झुकाव बढ़ा। इन्हें सूफी कहा जाने लगा।

❖ इन लोगों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की।

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।
- उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी।
- सूफियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

- बारहवीं शताब्दी के आसपास इस्लामी दुनिया में सूफी सिलसिलों का गठन होने लगा। सिलसिला का शाब्दिक अर्थ है- जंजीर, जो शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते का द्योतक है। इस कड़ी के द्वारा आध्यात्मिक शक्ति और आशीर्वाद मुरीदों तक पहुँचता था।

- सूफी संतों के द्वारा दीक्षा के विशिष्ट अनुष्ठान विकसित किए गए जिसमें दीक्षित को निष्ठा का वचन देना होता था, और सिर मुँडवाकर, थेगड़ी लगे वस्त्र धारण करने पड़ते थे।
- पीर की मृत्यु के बाद उसकी दरगाह (फारसी में इसका अर्थ दरबार) उसके मुरीदों के लिए भक्ति का स्थल बन जाती थी। इस तरह पीर की दरगाह पर जियारत के लिए जाने की, खासतौर से उनकी बरसी के अवसर पर, परिपाटी चल निकली।

- इस परिपाटी को उर्स (पीर की आत्मा का ईश्वर से मिलन) कहा जाता था, क्योंकि लोगों का मानना था कि मृत्यु के बाद पीर ईश्वर से एकीभूत हो जाते हैं और इस तरह पहले के बजाय उनके अधिक करीब हो जाते हैं।
- कुछ रहस्यवादियों ने सूफी सिद्धांतों की मौलिक व्याख्या के आधार पर नवीन आंदोलनों की नींव रखी। खानकाह का तिरस्कार करके यह रहस्यवादी, फकीर की जिदंगी बिताते थे।

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- और निर्धनता और ब्रह्मचर्य को उन्होंने गौरव प्रदान किया।
- इन्हें विभिन्न नामों से जाना जाता था – कलंदर, मदारी, मलंग, हैदरी इत्यादि ।
- शरिया की अवहेलना करने के कारण उन्हें बे शरिया कहा जाता था। इस तरह उन्हें शरिया का पालन करने वाले (बा-शरिया) सूफियों से अलग करके देखा जाता था।

1. बा–शरीया का अभिप्राय था– इस्लामी कानून अर्थात् शरीया का पालन करने वाले सिलसिले।

2. बे–शरीया का तात्पर्य था– ऐसे सिलसिले जो शरीया में बँधे हुए नहीं थे। शरीया की अवहेलना करने के कारण उन्हें बे–शरीया के नाम से जाना जाता था।

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

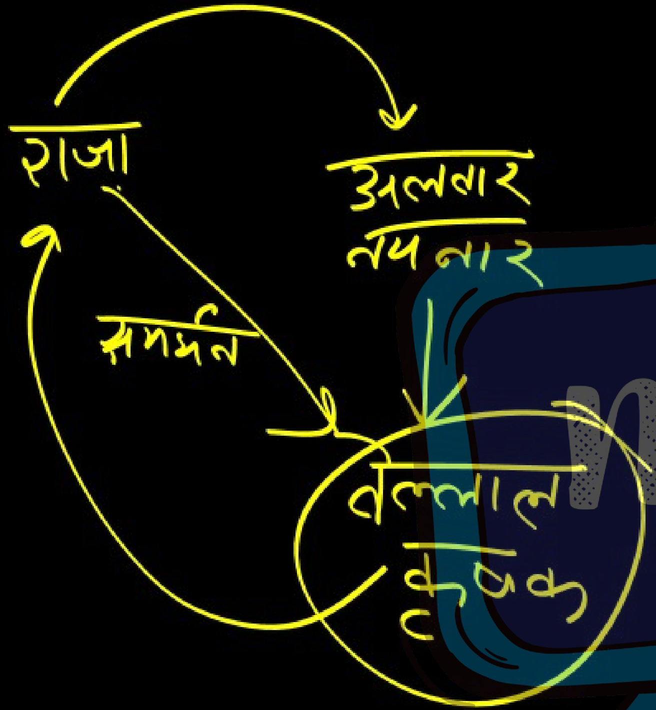

प्रश्न 7. क्यों और किस तरह शासकों ने नयनार और सूफी संतों से अपने संबंध बनाने का प्रयास किया?

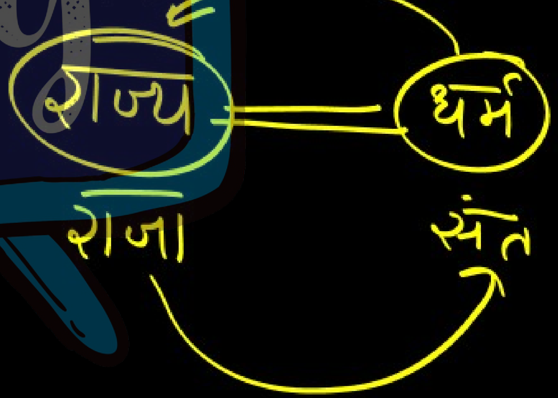

उत्तर : चोल शासकों ने नयनार संतों के साथ संबंध बनाने पर बल दिया और उनका समर्थन हासिल करने का प्रयत्न किया। नयनार संत वेल्लाल कृषकों द्वारा सम्मानित होते थे और आम लोगों में बहुत लोकप्रिय थें इसलिए शासकों में भी उनका समर्थन पाने का प्रयास किया। अपने राजस्व के पद को दैवीय स्वरूप प्रदान करने और अपनी सत्ता के प्रदर्शन के लिए चोल शासकों ने सुंदर मंदिरों का निर्माण करवाया और उनमें पत्थर और धातु से बनी मूर्तियाँ स्थापित करवाईं।

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- चोल शासक परान्तक प्रथम ने संत कवि अप्पार संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएँ एक शिव मंदिर में स्थापित करवाईं।
- सूफी संत सामान्यतः सत्ता से दूर रहने की कोशिश करते थे, किन्तु यदि कोई शासक बिना माँगे अनुदान या भेट देता था तो वे उसे स्वीकार करते थे।